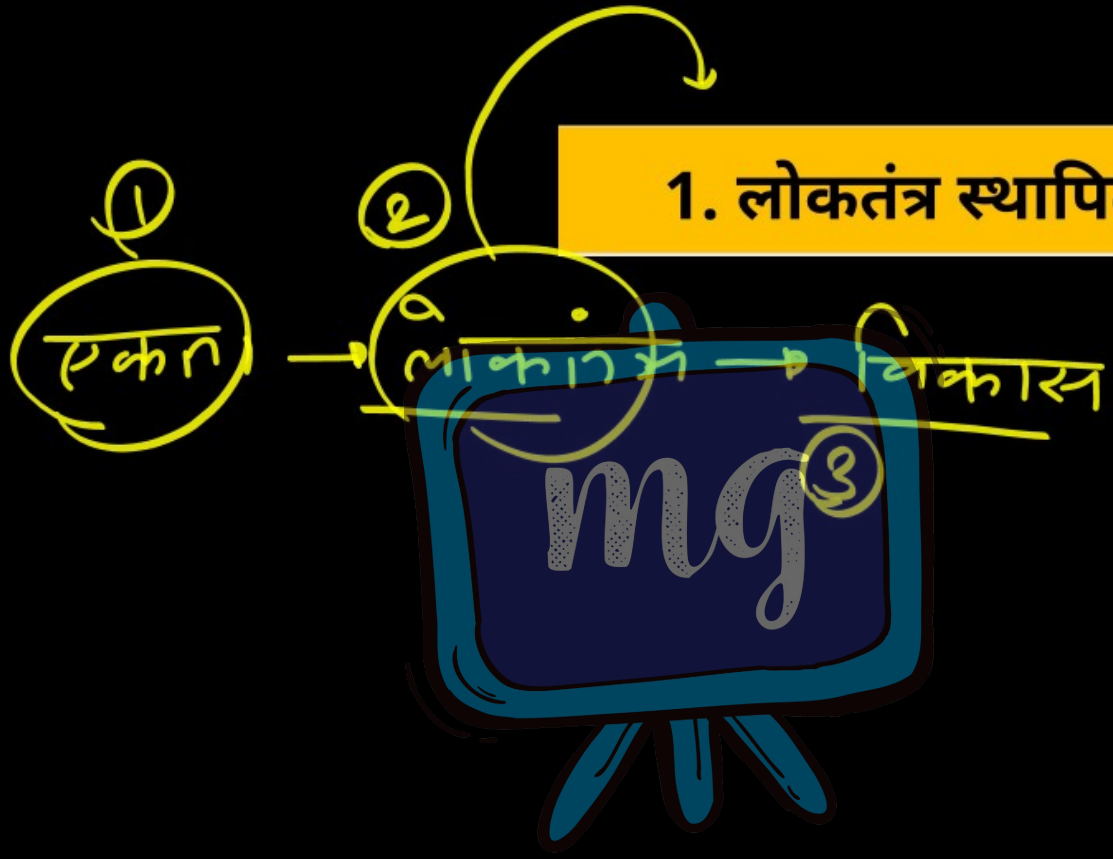

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
कक्षा - 12th | राजनीतिक विज्ञान
ई- पाठशाला
एक दल के प्रभुत्व का दौर
ONE SHOT
पूरा चैप्टर एक ही क्लास में ...
LIVE | 29 SEP | 6:30 PM

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

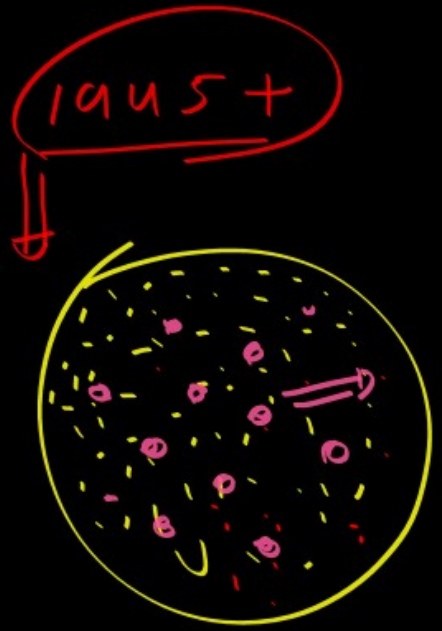
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1. लोकतंत्र स्थापित करने की चुनौती



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



I.स्वतंत्रता के बाद की परिस्थिति

- स्वतंत्र भारत का जन्म कठिन परिस्थितियों में हुआ।
- शुरुआत से ही देश के सामने राष्ट्र-निर्माण की चुनौती थी।
- उपनिवेशवाद से स्वतंत्र हुए अनेक देशों ने:
  - लोकतंत्र को तत्काल अपनाने से परहेज किया।
  - राष्ट्रीय एकता को पहली प्राथमिकता माना।
  - लोकतंत्र को मतभेद और संघर्ष बढ़ाने वाला माना।
- परिणामस्वरूप कई देशों में:
  - एक नेता का प्रभावी नियंत्रण,
  - एक दल का शासन,
  - अथवा सेना का शासन स्थापित हुआ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

II. भारत का अलग रास्ता

भारत के नेताओं ने लोकतंत्र का रास्ता चुना क्योंकि:

- स्वतंत्रता-संग्राम की लोकतंत्र के प्रति गहरी प्रतिबद्धता थी।
- नेताओं ने राजनीति को केवल समस्या नहीं बल्कि समस्या के समाधान का उपाय माना।
- समाज में अलग-अलग समूहों की:
  - आकांक्षाएँ अलग होती हैं।
  - हितों में टकराव हो सकता है।

- ऐसे टकराव के समाधान का माध्यम- लोकतांत्रिक राजनीति।
- राजनीतिक गतिविधि का उद्देश्य:
  - जनहित का निर्णय करना
  - तथा उस पर अमल करना।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

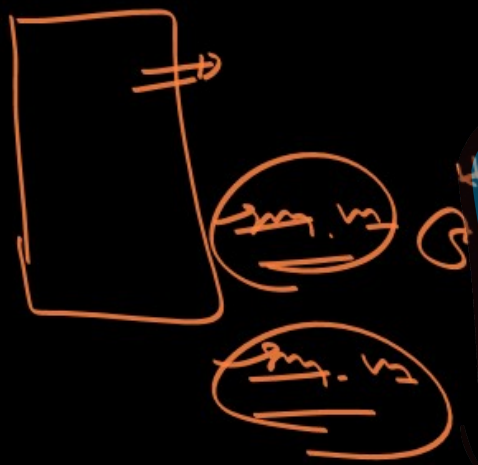
Flowchart

- विविध सामाजिक समूह
- ↓
- अलग-अलग आकांक्षाएँ और हित
- ↓
- हितों का टकराव
- ↓
- लोकतांत्रिक राजनीति
- ↓
- जनहित का निर्णय एवं क्रियान्वयन

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

III. संविधान और चुनावी लोकतंत्र

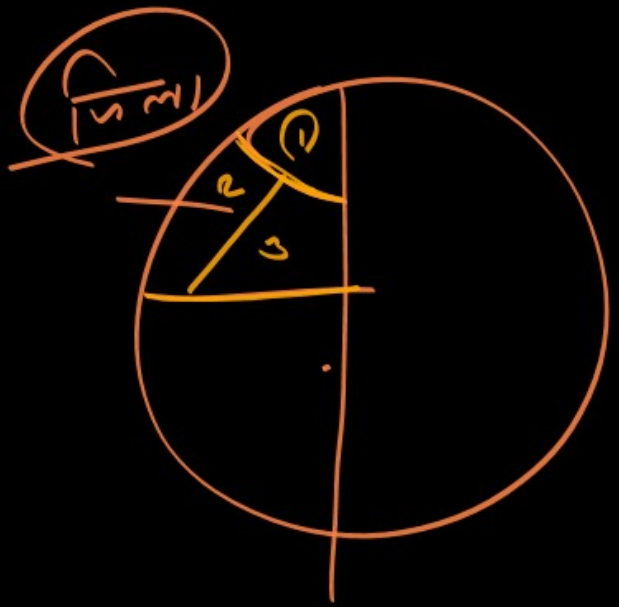


A. संविधान

- संविधान अंगीकृत — 26 नवम्बर 1949
- संविधान पर हस्ताक्षर — 24 जनवरी 1950
- संविधान लागू — 26 जनवरी 1950
- उस समय देश का शासन अंतरिम सरकार चला रही थी।
- आवश्यकता थी कि शासन लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित सरकार चलाए।

B. चुनाव आयोग

- जनवरी 1950 — भारत के चुनाव आयोग का गठन।
- प्रथम चुनाव आयुक्त — सुकुमार सेन।
- प्रारंभिक उम्मीद — पहला आम चुनाव 1950 में कराया जाएगा।



IV. प्रथम आम चुनाव की चुनौतियाँ

भारत जैसे विशाल देश में स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव कराना अत्यंत कठिन था।

प्रमुख कार्य

A. चुनाव क्षेत्रों का सीमांकन

- चुनाव क्षेत्रों की सीमाएँ तय करना आवश्यक था।

B. मतदाता सूची

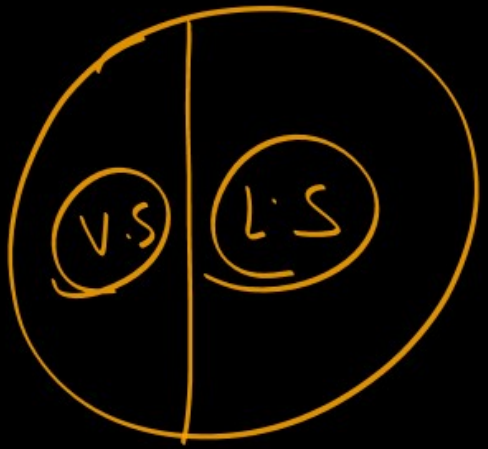
- मताधिकार प्राप्त सभी वयस्क व्यक्तियों की सूची तैयार करनी थी।

C. महिलाओं से संबंधित समस्या

- पहली मतदाता सूची में लगभग 40 लाख महिलाओं के नाम छूट गए।
- कई महिलाओं को उनके नाम के बजाय:
  - अमुक की बेटी"
  - अमुक की पत्नी" के रूप में दर्ज किया गया।
- चुनाव आयोग ने ऐसी प्रविष्टियों को स्वीकार नहीं किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



D. प्रथम चुनाव से जुड़े प्रमुख आँकड़े

तथ्य	संख्या
मतदाता	17 करोड़
चुने जाने वाले विधायक	3200
लोकसभा सांसद	489
साक्षर मतदाता	केवल 15%
प्रशिक्षित अधिकारी एवं चुनावकर्मी	3 लाख से अधिक

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

V.लोकतंत्र की परीक्षा

- मतदाताओं की बड़ी संख्या:
  - गरीब थी।
  - निरक्षर थी।
- उस समय लोकतंत्र मुख्यतः धनी देशों में स्थापित था।
- यूरोप के कई देशों में भी महिलाओं को मताधिकार प्राप्त नहीं था।
- ऐसे वातावरण में भारत में सार्वभौम मताधिकार लागू करना एक बड़ा प्रयोग था।



VI. मतदान के बदलते तरीके

A. प्रथम आम चुनाव

- प्रत्येक उम्मीदवार के लिए अलग मतपेटी।
- मतपेटी पर उम्मीदवार का चुनाव-चिह्न।
- मतदाता को खाली मतपत्र मिलता था।
- मतदाता मतपत्र को अपने पसंदीदा उम्मीदवार की मतपेटी में डालता था।
- लगभग 20 लाख स्टील के बक्सों का उपयोग हुआ।





B. शुरुआती दो चुनावों के बाद

- मतपत्र पर:
  - उम्मीदवार का नाम
  - चुनाव-चिह्न अंकित होने लगा।
- मतदाता पसंदीदा उम्मीदवार के नाम पर मुहर लगाता था।
- यह व्यवस्था लगभग 40 वर्षों तक चली।

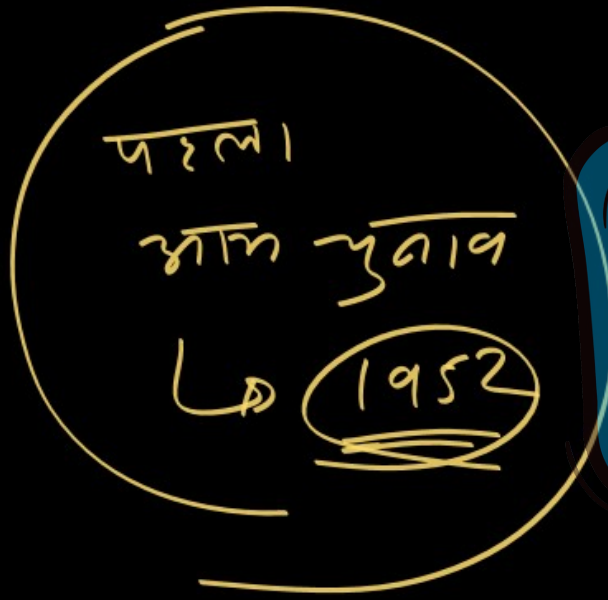
C. ईवीएम

- 1990 के दशक के अंत में चुनाव आयोग ने EVM का प्रयोग शुरू किया।
- 2004 तक पूरे देश में EVM का प्रयोग चालू हो गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





VII . भारत का पहला आम चुनाव

- चुनाव दो बार स्थगित हुआ।
- वास्तविक चुनाव अवधि:
  - अक्टूबर 1951 से फरवरी 1952
- सामान्यतः इसे 1952 का चुनाव कहा जाता है।
- चुनाव अभियान + मतदान + मतगणना = लगभग 6 महीने
- औसतन प्रत्येक सीट पर 4 उम्मीदवार।
- कुल मतदाताओं में आधे से अधिक ने मतदान किया।
- हारने वाले उम्मीदवारों भी परिणामों को निष्पक्ष माना।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

VIII. महत्त्व

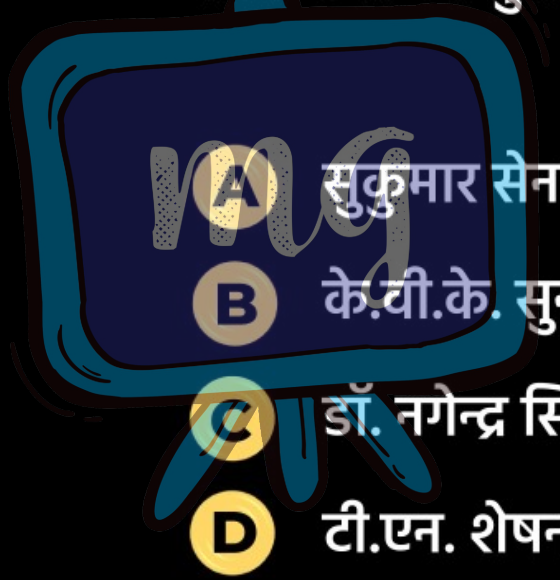
1952 का चुनाव:

- सार्वभौम मताधिकार के आलोचकों के संदेहों को गलत साबित करने वाला रहा।
- इस धारणा को चुनौती मिली कि:
  - गरीबी
  - अशिक्षा के वातावरण में लोकतांत्रिक चुनाव नहीं हो सकते।
- विश्व लोकतंत्र के इतिहास में इसे मील का पत्थर माना गया।

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

भारत के प्रथम चुनाव आयुक्त कौन थे?

[RBSE-2023]



(A) सुकुमार सेन

(B) के.वी.के. सुन्दरम

(C) डॉ. नगेन्द्र सिंह

(D) टी.एन. शेषन

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

E.V.M. का पूरा नाम लिखिए। [RBSE-2025]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रथम आम चुनाव निर्वाचन आयोग के लिए चुनौतीपूर्ण क्यों था?

[RBSE-2025]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रथम आम चुनाव को सफल बनाने के लिए चुनाव आयोग के दो कार्य बताइए। [Model Paper-2023]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Imp.

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

स्वतंत्रता से अब तक मतदान के तरीकों में आए बदलावों को समझाइए। [RBSE-2023]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. पहले तीन चुनावों में कांग्रेस का प्रभुत्व



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



I. कांग्रेस को बढ़त क्यों थी?

- कांग्रेस को स्वाधीनता संग्राम की विरासत प्राप्त थी।
- उस समय यही एकमात्र दल था जिसका संगठन पूरे देश में फैला था।
- जवाहरलाल नेहरू लोकप्रिय और करिश्माई नेता थे।
- नेहरू ने पूरे देश में कांग्रेस के चुनाव अभियान का नेतृत्व किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

II. लोकसभा चुनावों में कांग्रेस का प्रदर्शन

A. पहला आम चुनाव — 1952	
कुल लोकसभा सीटें — 489	
दल	सीटें
कांग्रेस	364
निर्दलीय	37
CPI	16
सोशलिस्ट पार्टी	12
किसान मजदूर प्रजा पार्टी	9
पीपल्स डेमोक्रेटिक फ्रंट	7
गणतंत्र परिषद	6
हिंदू महासभा	4
अन्य	34

B. दूसरा आम चुनाव — 1957	
कुल लोकसभा सीटें — 494	
दल	सीटें
कांग्रेस	371
निर्दलीय	42
CPI	27
सोशलिस्ट पार्टी	19
गणतंत्र परिषद	7
झारखंड पार्टी	6
SCF	6
जनसंघ	4
अन्य	12

C. तीसरा आम चुनाव — 1962	
कुल लोकसभा सीटें — 494	
दल	सीटें
कांग्रेस	361
निर्दलीय	29
CPI	20
प्रजा सोशलिस्ट पार्टी	18
स्वतंत्र पार्टी	14
जनसंघ	12
DMK	7
सोशलिस्ट पार्टी	6
अन्य	27

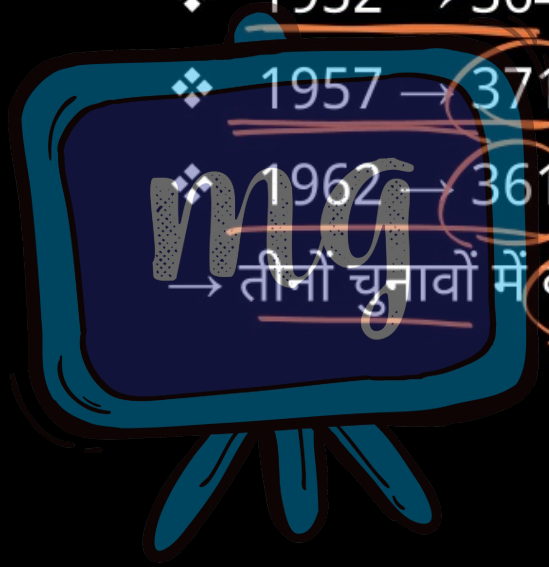
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Quick Revision

- 1952 → 364
- 1957 → 371
- 1962 → 361

→ तीनों चुनावों में कांग्रेस का स्पष्ट प्रभुत्व



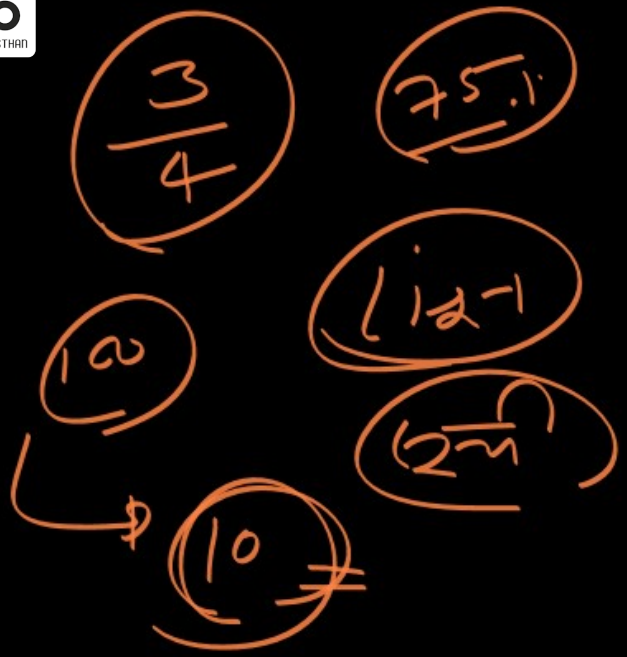
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



III. राष्ट्रीय एवं प्रांतीय स्तर पर कांग्रेस

- लोकसभा के साथ विधानसभा चुनाव भी हुए।
- त्रावणकोर-कोचीन, मद्रास तथा उड़ीसा को छोड़कर कांग्रेस ने सभी राज्यों में अधिकांश सीटें जीतीं।
- बाद में इन तीन राज्यों में भी कांग्रेस की सरकार बनी।
- इस प्रकार राष्ट्रीय और प्रांतीय दोनों स्तरों पर कांग्रेस का शासन स्थापित हुआ।
- पहले आम चुनाव के बाद जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री बने।



IV. 1957 एवं 1962

- कांग्रेस ने लोकसभा में अपनी मजबूत स्थिति बनाए रखी।
- लगभग तीन-चौथाई सीटें कांग्रेस के पास रहीं।
- कोई विपक्षी पार्टी कांग्रेस की जीती सीटों का दसवाँ हिस्सा भी नहीं जीत सकी।
- महत्वपूर्ण अपवाद — केरल, 1957।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

V. चुनाव-प्रणाली और कांग्रेस की सीटें

A. 1952 का उदाहरण

- कांग्रेस को कुल वोट — लगभग 45%
- सीटें — लगभग 74%
- सोशलिस्ट पार्टी:
  - वोट — लगभग 10%
  - सीटें — 3% से भी कम।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

B. कारण

भारत में चुनाव-प्रणाली:

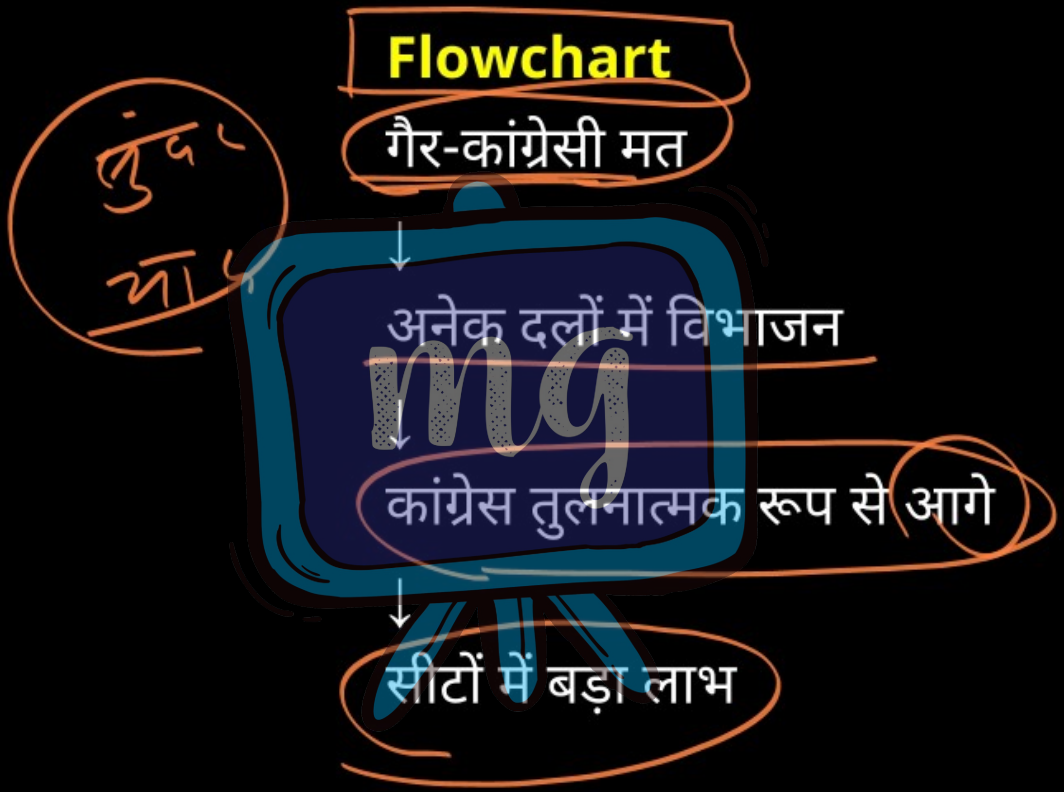
"सर्वाधिक वोट पाने वाले की जीत"

इसके कारण:

- किसी दल को दूसरों से थोड़ा अधिक वोट मिलने पर भी बहुत अधिक सीटें मिल सकती हैं।
- गैर-कांग्रेसी वोट:
  - कई दलों,
  - कई उम्मीदवारों में बँट गए।
- कांग्रेस अन्य दलों से आगे रही और अधिक सीटें जीतती गई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

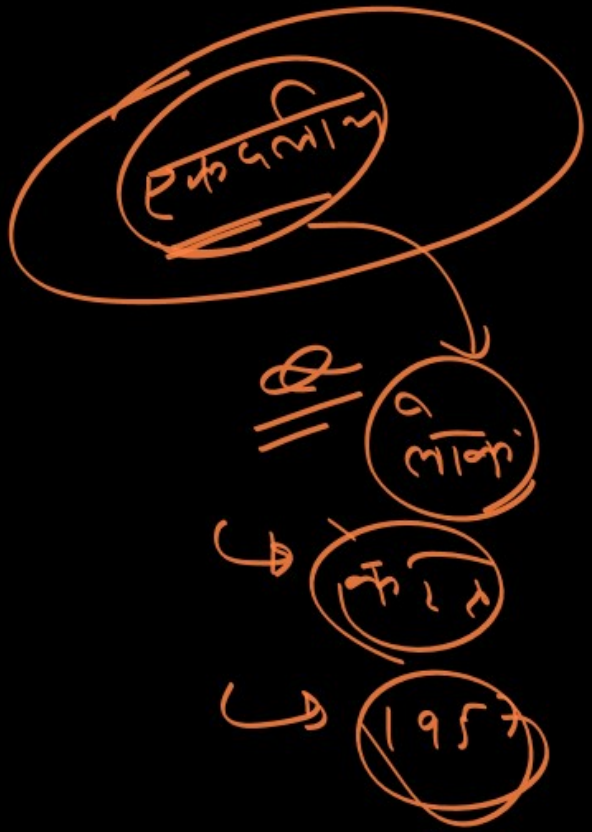
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

भारत में प्रथम तीन आम चुनावों में किस दल का प्रभुत्व रहा?

[RBSE-2022]



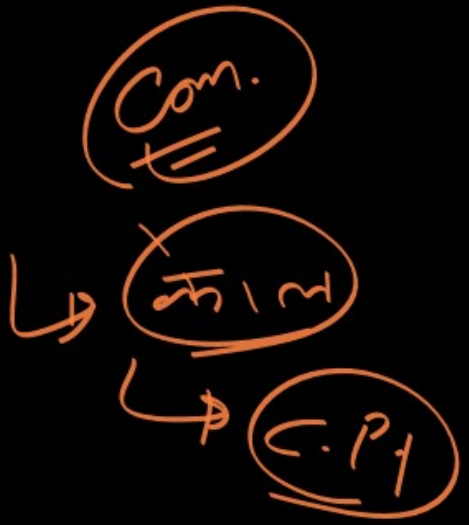


OTHER - केरल में कम्युनिस्टों की जीत–1957

- मार्च 1957 के विधानसभा चुनाव में कम्युनिस्ट पार्टी को सर्वाधिक सीटें मिलीं।
- कुल सीटें — 126
- कम्युनिस्ट पार्टी — 60 सीटें
- समर्थन — 5 स्वतंत्र उम्मीदवार
- राज्यपाल ने ई.एम.एस. नम्बूदरीपाद को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया।
- यह दुनिया में पहली बार था जब कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार लोकतांत्रिक चुनावों से बनी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



मुक्ति संघर्ष एवं सरकार की बर्खास्तगी

- कांग्रेस ने निर्वाचित सरकार के विरुद्ध 'मुक्ति संघर्ष' शुरू किया।
- कम्युनिस्ट सरकार कुछ क्रांतिकारी तथा प्रगतिशील नीतिगत पहल करना चाहती थी।
- 1959 में केंद्र की कांग्रेस सरकार ने:
  - संविधान के अनुच्छेद 356 के अंतर्गत कम्युनिस्ट सरकार को बर्खास्त कर दिया।
- यह फैसला अत्यंत विवादास्पद रहा।
- इसे आपातकालीन शक्तियों के दुरुपयोग के उदाहरण के रूप में देखा गया।

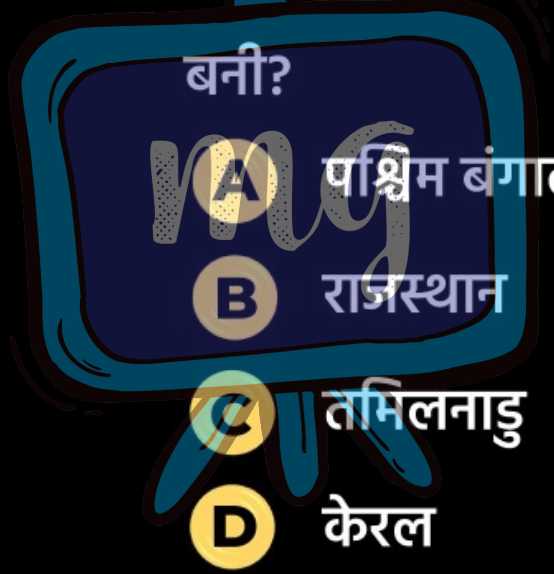
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

भारत में सर्वप्रथम गैर-कांग्रेसी सरकार किस राज्य में बनी?

[Model Paper-2024]



A पश्चिम बंगाल

B राजस्थान

C तमिलनाडु

D केरल

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

रिक्त स्थान

1957 में _____ राज्य में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की अगुवाई में सरकार बनी। [Model Paper-2023]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

लोकतांत्रिक चुनावों द्वारा कम्युनिस्ट पार्टी की पहली सरकार कहाँ और कब बनी? [Model Paper-2026]



3. कांग्रेस के प्रभुत्व की प्रकृति



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

I. अन्य देशों से अंतर

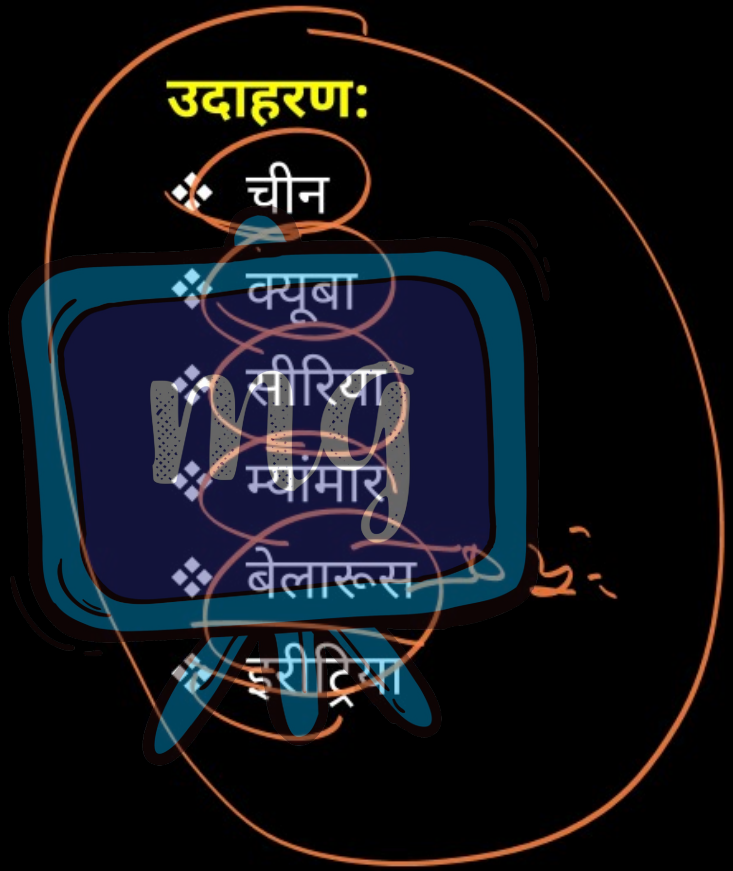
दुनिया के कई देशों में एक दल का प्रभुत्व रहा, लेकिन भारत का उदाहरण अलग था।

अन्य देशों में प्रभुत्व:

- लोकतंत्र की कीमत पर,
- संवैधानिक व्यवस्था,
- कानूनी उपाय,
- अथवा सैन्य उपायों से कायम हुआ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भारत में:

- बहुदलीय प्रतिस्पर्धा मौजूद थी।
- चुनाव मुक्त एवं निष्पक्ष थे।
- फिर भी कांग्रेस लगातार चुनाव जीतती रही।

मुख्य निष्कर्ष

भारत में एक-दलीय प्रभुत्व ≠ एक-दलीय शासन

यह प्रभुत्व लोकतांत्रिक परिस्थितियों और चुनावी प्रतिस्पर्धा के भीतर विकसित हुआ।

II. कांग्रेस की सफलता के कारण

A. स्वाधीनता-संग्राम की विरासत

कांग्रेस को राष्ट्रीय आंदोलन का वारिस माना गया।

B. राष्ट्रीय आंदोलन के नेता

स्वतंत्रता आंदोलन के अनेक प्रमुख नेता कांग्रेस के उम्मीदवार बने।

C. सुसंगठित पार्टी

कांग्रेस पहले से ही मजबूत एवं संगठित थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



D. अन्य दलों से शुरुआती बढ़त

- अधिकांश अन्य दल स्वतंत्रता के आसपास या उसके बाद बने।
- कांग्रेस को 'अव्वल और इकलौती' होने का लाभ मिला।

E. स्थानीय स्तर तक संगठन

- कांग्रेस का नेटवर्क देश भर में स्थानीय स्तर तक पहुँच चुका था।

F. समावेशी प्रकृति

- कांग्रेस की प्रकृति:
  - सबको समेटने वाली
  - मेलजोल के साथ चलने वाली थी।

III. कांग्रेस — सामाजिक गठबंधन

A. विकास



❖ कांग्रेस:

- नवशिक्षित,
- कामकाजी,
- व्यापारिक वर्गों का हित-समूह थी।

❖ **20वीं सदी**

- कांग्रेस ने जनांदोलन का रूप लिया।
- धीरे-धीरे जनव्यापी राजनीतिक पार्टी बनी।

B. सामाजिक आधार का विस्तार

प्रारंभ में प्रभाव:

- अंग्रेजीदाँ
- अगड़ी जाति
- ऊँचा मध्यवर्ग
- शहरी अभिजन

आंदोलनों के विस्तार से कांग्रेस में शामिल हुए:

- किसान + उद्योगपति
- शहर + गाँव
- मजदूर + मालिक
- मध्य + निम्न + उच्च वर्ग
- विभिन्न जातियाँ

इस प्रकार आजादी के समय कांग्रेस सतरंगा सामाजिक गठबंधन बन चुकी थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

IV. कांग्रेस — विचारधारात्मक गठबंधन

कांग्रेस के भीतर अनेक वैचारिक धाराएँ मौजूद थीं:

- क्रांतिकारी
- शांतिवादी
- कंजरवेटिव
- रेडिकल
- गरमपंथी
- नरमपंथी
- दक्षिणपंथी
- वामपंथी
- मध्यमार्गी

इस अर्थ में कांग्रेस:

- केवल राजनीतिक दल नहीं,
- बल्कि विभिन्न विचारों और हितों का मंच भी थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



V. गुटों में तालमेल और सहनशीलता

कांग्रेस की गठबंधनी प्रकृति उसकी महत्वपूर्ण शक्ति थी।

A. प्रमुख विशेषताएँ

- नए समूहों को अपने भीतर समाहित करना।
- अतिवादी रुख से बचना।
- मुद्दों पर संतुलन बनाए रखना।
- सुलह-समझौते की रणनीति।
- सर्व-समावेशी स्वरूप।
- आंतरिक मतभेदों के प्रति सहनशीलता।
- विभिन्न नेताओं एवं समूहों की महत्वाकांक्षाओं को समायोजित करना।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



B. विपक्ष के लिए कठिनाई

- विपक्ष द्वारा उठाए गए कई मुद्दों को कांग्रेस अपने कार्यक्रम में शामिल कर लेती थी।
- इससे विपक्ष के लिए कांग्रेस से अलग स्पष्ट विकल्प प्रस्तुत करना कठिन हो जाता था।

C. कांग्रेस में गुटबाजी

गुट – पार्टी के भीतर मौजूद विभिन्न समूह।

गुट बनने के कारण:

- वैचारिक सरोकार
- व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा
- प्रतिस्पर्धा

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लेकिन कांग्रेस में गुटबाजी:

- केवल कमजोरी नहीं बनी,
- बल्कि कई स्थितियों में ताकत साबित हुई।

कारण:

- अलग हितों एवं विचारों के नेताओं को कांग्रेस के भीतर स्थान मिला।
- नेताओं ने पार्टी छोड़कर नया दल बनाने की बजाय अंदर ही प्रतिस्पर्धा करना बेहतर समझा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

VI. 'कांग्रेस-प्रणाली'

- कांग्रेस की प्रांतीय इकाइयाँ विभिन्न गुटों से बनी थीं।
- विभिन्न गुट अलग-अलग वैचारिक रुख रखते थे।
- कांग्रेस स्वयं एक बड़ी मध्यमार्गी पार्टी के रूप में सामने आती थी।
- अन्य दल कांग्रेस के अलग-अलग गुटों को प्रभावित करने का प्रयास करते थे।
- विपक्ष:
  - कांग्रेस की आलोचना करता था।
  - उस पर दबाव डालता था।
  - अप्रत्यक्ष रूप से नीतियों को प्रभावित करता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

VI. 'कांग्रेस-प्रणाली'

इसलिए

कांग्रेस ने एक साथ:

- शासक दल
- तथा काफी हद तक विपक्ष दोनों की भूमिका निभाई।

इसी व्यवस्था को 'कांग्रेस-प्रणाली' कहा गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लघूत्तरात्मक प्रश्न

कांग्रेस को सामाजिक और विचारधारात्मक गठबंधन क्यों कहा जाता है?

[RBSE-2022]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

क्या आजादी के समय कांग्रेस एक सतरंगे सामाजिक गठबंधन का रूप ले चुकी थी? तर्क दीजिए।

[Model Paper-2024]



OTHER. सोशलिस्ट पार्टी

A. उद्भव

- 1934 — कांग्रेस के भीतर युवा नेताओं ने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी बनाई।
- उद्देश्य:
  - कांग्रेस को अधिक परिवर्तनकामी
  - और समतावादी बनाना।
- 1948 — कांग्रेस ने दोहरी सदस्यता रोकने के लिए संविधान बदला।

❖ परिणाम:

- समाजवादी कांग्रेस से अलग हुए।
- सोशलिस्ट पार्टी बनी।

B. विचारधारा

- लोकतांत्रिक समाजवाद में विश्वास।
- कांग्रेस और कम्युनिस्ट दोनों से अलग।
- कांग्रेस पर आरोप:
  - पूँजीपतियों एवं जमींदारों का पक्ष लेना।
  - मजदूरों एवं किसानों की उपेक्षा करना।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

C.1955 की दुविधा

- कांग्रेस ने समाजवादी बनावट वाले समाज को अपना लक्ष्य घोषित किया।
- इससे सोशलिस्ट पार्टी के लिए स्वयं को कांग्रेस के विकल्प के रूप में प्रस्तुत करना कठिन हुआ।
- राममनोहर लोहिया – कांग्रेस से दूरी बढ़ाने के पक्ष में।
- अशोक मेहता – कांग्रेस से सीमित सहयोग के पक्ष में।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

D. समाजवादी दलों के रूप

- किसान मजदूर प्रजा पार्टी
- प्रजा सोशलिस्ट पार्टी
- संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी

E. प्रमुख नेता

- जयप्रकाश नारायण (1)
- अच्युत पटवर्धन
- अशोक मेहता (2)
- आचार्य नरेन्द्र देव (3)
- राममनोहर लोहिया (4)
- एस.एम. जोशी

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

सोशलिस्ट पार्टी पर लेख लिखिए।

[Model Paper-2025]

A महात्मा गांधी
B सरदार पटेल
C जवाहरलाल नेहरू
D डॉ. भीमराव अम्बेडकर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

CPI

OTHER. कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया — CPI

A. प्रारंभ

- 1920 के दशक के प्रारंभ में भारत के विभिन्न भागों में कम्युनिस्ट समूह बने।
- प्रेरणा — रूस की बोल्शेविक क्रांति।
- उद्देश्य — भारतीय समस्याओं के समाधान हेतु साम्यवाद का मार्ग।
- 1935 से कम्युनिस्ट मुख्यतः कांग्रेस के भीतर काम करते रहे।
- दिसंबर 1941 — कांग्रेस से अलग हुए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

B. स्वतंत्रता के बाद

CPI के सामने प्रश्न:

- 1947 की स्वतंत्रता वास्तविक थी या नहीं?

पार्टी का प्रारंभिक मत:

(i) ❖ सत्ता हस्तांतरण को वास्तविक स्वतंत्रता नहीं माना।

(ii) ❖ तेलंगाना में हिंसक विद्रोह को बढ़ावा दिया।

(iii) ❖ जनसमर्थन नहीं मिला।

(iv) ❖ सशस्त्र सेनाओं द्वारा विद्रोह दबाया गया।

C. 1951 का परिवर्तन

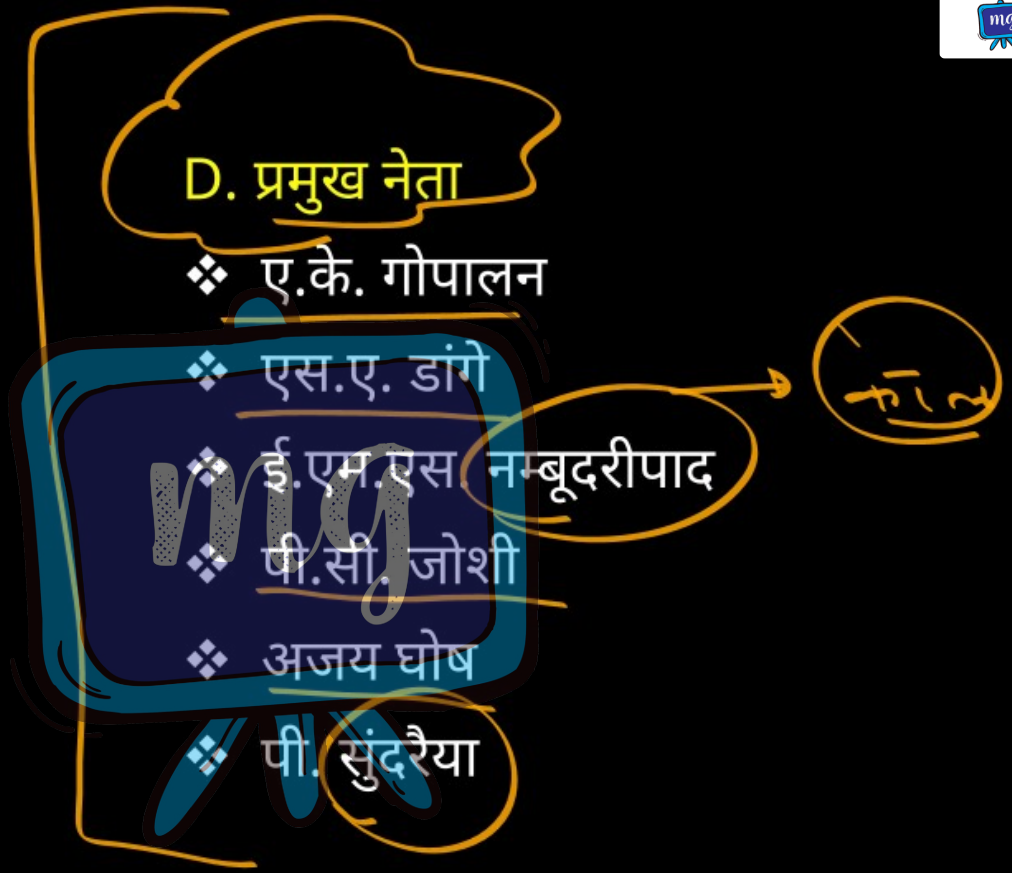
- CPI ने हिंसक क्रांति का रास्ता छोड़ दिया।
- आम चुनावों में भाग लेने का निर्णय किया।
- प्रथम आम चुनाव:
  - 16 सीटें
  - सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी।
  - मुख्य समर्थन:
    - (i) आंध्र प्रदेश
    - (ii) पश्चिम बंगाल
    - (iii) बिहार
    - (iv) केरल

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

D. प्रमुख नेता

- ए.के. गोपालन
- एस.ए. डांगे
- ई.एम.एस नम्बूदरीपाद
- पी.सी. जोशी
- अजय घोष
- पी. सुंदरैया



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



E.1964 का विभाजन

- चीन-सोवियत संघ वैचारिक मतभेद के बाद CPI में विभाजन:
  - सोवियत विचारधारा के समर्थक
    - → CPI में रहे
  - विरोधी मत वाले
    - → CPI(M) का गठन

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया का विभाजन किस आधार पर हुआ?

[RBSE-2022]

A महात्मा गांधी

B सरदार पटेल

C जवाहरलाल नेहरू

D डॉ. भीमराव अम्बेडकर

OTHER . भारतीय जनसंघ — BJS

A. गठन

- स्थापना — 1951
- संस्थापक-अध्यक्ष — श्यामा प्रसाद मुखर्जी
- जड़ें:
  - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
  - हिंदू महासभा
- 1948 — कांग्रेस ने दोहरी सदस्यता रोकने के लिए संविधान बदला।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

B.विचार एवं कार्यक्रम

- "एक देश, एक संस्कृति और एक राष्ट्र"
- भारतीय संस्कृति एवं परंपरा के आधार पर:
  - आधुनिक,
  - प्रगतिशील,
  - ताकतवर भारत।
- भारत-पाकिस्तान को मिलाकर अखंड भारत का विचार।
- अंग्रेजी हटाकर हिंदी को राजभाषा बनाने के आंदोलन में सक्रिय।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- धार्मिक एवं सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों को रियायत देने का विरोध।
- चीन के 1964 के परमाणु परीक्षण के बाद भारत द्वारा भी परमाणु हथियार बनाने की पैरोकारी।



C. चुनावी प्रदर्शन

1952 — लोकसभा की 3 सीटें

1957 — लोकसभा की 4 सीटें

प्रारंभिक समर्थन:

- राजस्थान
- मध्य प्रदेश
- दिल्ली
- उत्तर प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में।

D. प्रमुख नेता

- श्यामा प्रसाद मुखर्जी
- दीनदयाल उपाध्याय
- बलराज मधोक

भारतीय जनता पार्टी की जड़ें इसी जनसंघ में बताई गई हैं।

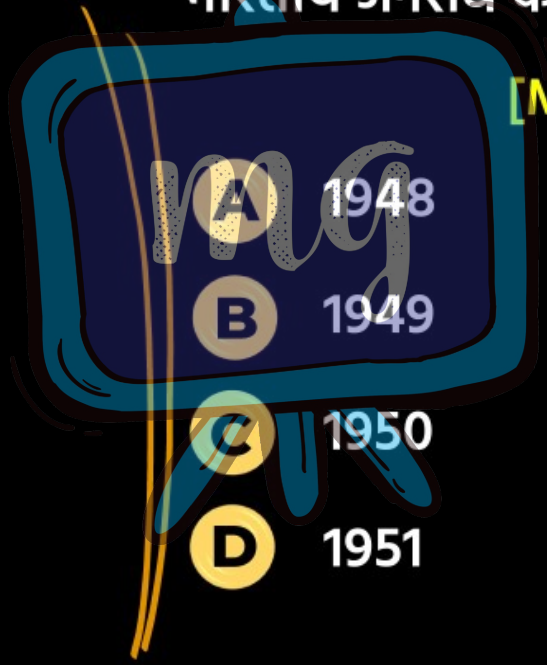
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

भारतीय जनसंघ का गठन कब हुआ?

[Model Paper-2025, RBSE-2026]



A 1948

B 1949

C 1950

D 1951

लघूत्तरात्मक प्रश्न

जनसंघ ने किस विचारधारा पर जोर दिया?

[RBSE-2025, Model Paper-2026]

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

भारतीय जनसंघ पर लेख लिखिए।

[Model Paper-2025]



4. विपक्षी पार्टियों का उद्भव



एक-दलीय प्रभुत्व के बावजूद भारत में विपक्षी दल मौजूद थे।

I. विशेषताएँ

- भारत में बहुविध और जीवंत विपक्षी पार्टियाँ थीं।
- अनेक विपक्षी दल 1952 के चुनाव से पहले बन चुके थे।
- कुछ दलों ने 1960 और 1970 के दशकों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- वर्तमान की अनेक गैर-कांग्रेसी पार्टियों की जड़ें 1950 के दशक की विपक्षी पार्टियों में बताई गई हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

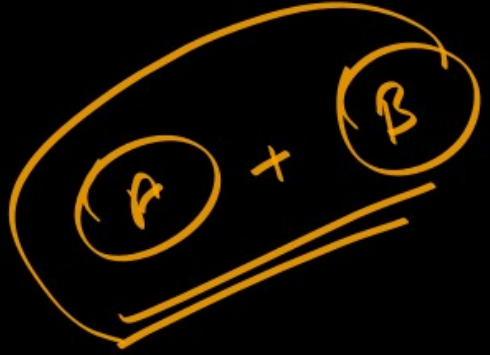
II. विपक्षी दलों का महत्त्व

यद्यपि संसद एवं विधानसभाओं में विपक्ष का प्रतिनिधित्व सीमित था, फिर भी उनकी भूमिका महत्वपूर्ण थी।

A. प्रमुख भूमिकाएँ

- शासन-व्यवस्था के लोकतांत्रिक चरित्र को बनाए रखना।
- कांग्रेस की नीतियों और व्यवहारों की सुचिंतित आलोचना।
- शासक दल पर अंकुश।
- कांग्रेस के भीतर शक्ति-संतुलन को प्रभावित करना।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN



missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- लोकतांत्रिक राजनीतिक विकल्प की संभावना को जीवित रखना।
- व्यवस्थाजन्य असंतोष को लोकतंत्र-विरोधी बनने से रोकना।
- भविष्य के महत्वपूर्ण नेताओं को तैयार करना।

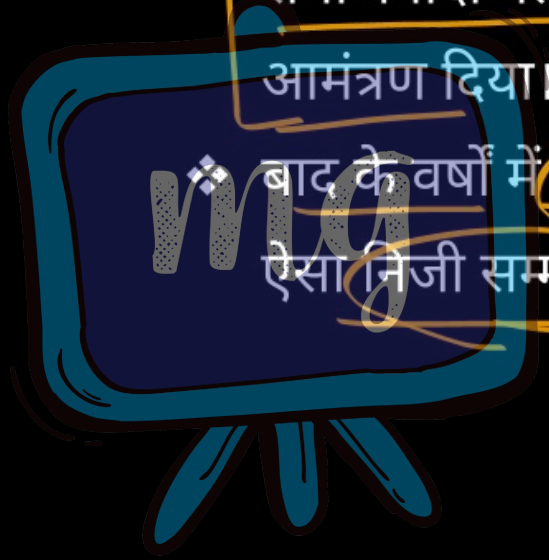
III. सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच संबंध

- शुरुआती वर्षों में:
  - कांग्रेस और विपक्षी नेताओं के बीच पारस्परिक सम्मान था।
  - अंतरिम सरकार में:
    - डॉ. अंबेडकर
    - श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे विपक्षी नेता भी शामिल थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- जवाहरलाल नेहरू ने जयप्रकाश नारायण जैसे समाजवादी नेताओं को सरकार में शामिल होने का आमंत्रण दिया।
- बाद के वर्षों में दलगत प्रतिस्पर्धा तीव्र होने के साथ ऐसा निजी सम्मान कम होता गया।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

IV. कांग्रेस के प्रभुत्व का समग्र कारण

- कांग्रेस का प्रभुत्व
- स्वाधीनता आंदोलन की विरासत
- नेहरू का नेतृत्व
- देशव्यापी संगठन
- स्थानीय नेटवर्क
- सामाजिक गठबंधन
- विचारधारात्मक विविधता
- गुटों के प्रति सहनशीलता
- विपक्षी मतों का विभाजन
- सर्वाधिक वोट पाने वाले की जीत की चुनाव-प्रणाली

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

V. कांग्रेस प्रभुत्व में परिवर्तन

राष्ट्रीय आंदोलन की समावेशी प्रकृति के कारण विभिन्न:

- समूह,
- वर्ग,
- हित कांग्रेस की ओर आकर्षित हुए।

कांग्रेस सामाजिक एवं वैचारिक रूप से व्यापक गठबंधन बनी।

स्वतंत्रता संघर्ष में केंद्रीय भूमिका के कारण अन्य दलों की तुलना में उसे बढ़त मिली।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- जैसे-जैसे:
  - विभिन्न व्यक्तियों,
  - हित-समूहों को अपने भीतर समाहित करने की कांग्रेस की क्षमता घटी,
  - वैसे-वैसे दूसरे दलों का महत्व बढ़ा।
- इसलिए कांग्रेस का प्रभुत्व भारतीय राजनीति के एक विशेष दौर तक सीमित रहा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

OTHER. प्रमुख व्यक्तित्व

I. डॉ. भीमराव अंबेडकर

- जाति-विरोधी आंदोलन के नेता।
- दलित न्याय के संघर्ष के अगुआ।
- संस्थापक- इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी के
- स्थापना - शिड्यूल्ड कास्ट्स फेडरेशन
- संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष।
- नेहरू के प्रथम मंत्रिमंडल में मंत्री।
- हिंदू कोड बिल पर मतभेद के कारण 1951 में इस्तीफा
- 1956 में हजारों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म अपनाया।

II.मौलाना अबुल कलाम आजाद

- मूल नाम — अबुल कलाम मोहियुद्दीन अहमद
- इस्लाम के विद्वान।
- स्वतंत्रता सेनानी।
- कांग्रेस नेता।
- हिंदू-मुस्लिम एकता के समर्थक।
- विभाजन के विरोधी।
- संविधान सभा सदस्य।
- स्वतंत्र भारत के प्रथम मंत्रिमंडल में शिक्षामंत्री।

III.राजकुमारी अमृत कौर

- गांधीवादी स्वतंत्रता सेनानी।
- संविधान सभा सदस्य।
- प्रथम मंत्रिमंडल में स्वास्थ्य मंत्री।
- 1957 तक स्वास्थ्य मंत्री रहीं।

IV.आचार्य नरेन्द्र देव

- स्वतंत्रता सेनानी।
- कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापक।
- किसान आंदोलन में सक्रिय।
- बौद्ध धर्म के विद्वान।
- सोशलिस्ट पार्टी तथा बाद में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के नेता।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

V. ए.के. गोपालन

केरल के कम्युनिस्ट नेता।

राजनीतिक जीवन की शुरुआत कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप में

1939 — कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल।

1964 के विभाजन के बाद CPI(M) में।

1952 से सांसद।

VI.दीनदयाल उपाध्याय

1942 से RSS के पूर्णकालिक कार्यकर्ता।

भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य।

- जनसंघ में:
  - महासचिव
  - बाद में अध्यक्ष।
- समग्र मानवतावाद सिद्धांत के प्रणेता।

VIII. रफ़ी अहमद किदवई

- उत्तर प्रदेश के कांग्रेस नेता।
- 1937 की प्रांतीय सरकार में मंत्री।
- 1946 में पुनः मंत्री।
- प्रथम केंद्रीय मंत्रिमंडल में संचार मंत्री।
- 1952-54 — खाद्य एवं कृषि मंत्री।

Timeline

1885

→ कांग्रेस का जन्म

1934

→ कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन

1935

→ कम्युनिस्टों ने मुख्यतः कांग्रेस के भीतर काम करना शुरू किया

1941

→ कम्युनिस्ट कांग्रेस से अलग

1948

→ समाजवादी कांग्रेस से अलग होकर सोशलिस्ट पार्टी बने

26 नवम्बर 1949

→ संविधान अंगीकृत

24 जनवरी 1950

→ संविधान पर हस्ताक्षर

26 जनवरी 1950

→ संविधान लागू

जनवरी 1950

→ चुनाव आयोग का गठन

1951

→ जनसंघ का गठन

→ CPI ने हिंसक क्रांति का रास्ता छोड़ा

अक्टूबर 1951–फरवरी 1952

→ पहला आम चुनाव

1952

→ कांग्रेस — 364/489 सीटें

→ CPI — सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी

1957

→ दूसरा आम चुनाव

→ केरल में कम्युनिस्ट सरकार

1959

→ केरल की कम्युनिस्ट सरकार बर्खास्त

1962

→ तीसरा आम चुनाव

1964

→ CPI का विभाजन

→ CPI तथा CPI(M)

2004

→ पूरे देश में EVM का इस्तेमाल